वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 447
ISBN-978-93-84003-56-2

श्री सुमतिनाथ विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित 'श्री गौतम गणधर वर्ष' 2014–15 के अन्तर्गत पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी के 44 वें दीक्षा दिवस–मगसिर कृ. तीज के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2541, मगसिर कृ. 3	मूल्य
1100 प्रतियाँ	9 नवम्बर 2014, रविवार	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस बीसवीं सदी में नारियों में सर्वप्रथम ग्रंथ लेखन का कार्य करके 400 ग्रंथों का लेखन करके साहित्य भंडार को समृद्ध करने में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। अपने 61 वर्ष के दीक्षित जीवन में निरन्तर श्रुत की आराधना करने वाली पूज्य माताजी की लेखनी अभी भी रुकी नहीं है तथा 81 वर्ष की अवस्था में भी लेखन कार्य करके नित्य नयी कृतियाँ उनकी लेखनी से प्रसूत हो रही हैं, जिनमें विभिन्न स्तोत्र पाठ, स्वाध्याय के ग्रंथ एवं पूजा विधान आदि हैं। भक्ति मार्ग को प्रशस्त करने वाली पूजाओं में भी पूज्य माताजी उस अनुयोग संबंधी संपूर्ण विषयवस्तु को गागर में सागर की तरह समाहित करने में अत्यन्त निष्णात हैं। माताजी द्वारा रचित अनेक छोटे–बड़े विधानों को करके लोग भक्ति सरिता में अवगाहन करके आनंद की अनुभूति करते हैं।

श्रावकों के षट्कर्तव्य आचार्यों ने बताए हैं—

देवपूजा गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थाणां, षट्कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् देवपूजा, गुरुओं की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप एवं दान गृहस्थों को प्रतिदिन करते रहना चाहिए जिससे उनका गृहस्थ धर्म सार्थक माना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के माध्यम से प्रकाशित करके नित्य नई कृतियाँ पाठकों तक पहुँचाने का सौभाग्य दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के पदाधिकारियों को प्राप्त होता है जो हमारे लिये गौरव की बात है। उसी क्रम में **'श्री सुमतिनाथ विधान'** की यह पुस्तक भी आप तक पहुँचायी जा रही है। इस विधान को करके भक्त शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या की एवं पाँचवें तीर्थंकर सुमतिनाथ भगवान की भक्ति करके असीम पुण्य का संचय करें यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें और आगे भी इसी तरह अपने ज्ञान से भक्तों को सिंचित करती रहें। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, यह जिनेन्द्र देव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

शाश्वत तीर्थ अयोध्या में वर्तमान में पाँच तीर्थंकरों ने जन्म लिया। तीर्थंकर श्री ऋषभदेव, अजितनाथ, अभिनन्दननाथ, सुमतिनाथ एवं अनंतनाथ भगवान। 24 तीर्थंकर विधानों की शृंखला में यह श्री सुमतिनाथ विधान है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से अयोध्या में भगवान ऋषभदेव, अजितनाथ, अभिनन्दननाथ एवं अनन्तनाथ की टोकों का जीर्णोद्धार, मन्दिर का निर्माण एवं विशाल प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होकर विराजमान हो चुकी हैं। अब सुमतिनाथ भगवान की टोंक के विकास का नम्बर है।

इस विधान में सर्वप्रथम मंगलाचरण करते हुए श्री समन्तभद्राचार्य विरचित श्री सुमतिनाथ स्तोत्र एवं पूज्य माताजी द्वारा रचित पद्यानुवाद है। फिर अर्हंत पूजा है। इसके बाद श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर पूजा एवं पंचकल्याणक के अर्घ्य हैं। पिता मेघरथ एवं माता मंगला से तीर्थंकर सुमतिनाथ ने चैत्र शुक्ला एकादशि को जन्म लिया, इन्द्रों ने सुमेरु पर्वत की पांडुक शिला पर ले जाकर भगवान का 1008 कलशों से जन्माभिषेक कर जन्म कल्याणक उत्सव मनाया। भगवान को जातिस्मरण से वैराग्य हुआ और उन्होंने वैशाख सुदी नवमी को दीक्षा ग्रहण की। चैत्र सुदी ग्यारस को केवलज्ञान हुआ, कुबेर ने समवसरण की रचना कर दी। चैत्र शुक्ला ग्यारस को ही भगवान ने सम्मेदाचल से मोक्ष को प्राप्त किया। भगवान का जन्म, केवलज्ञान एवं मोक्ष एक ही तिथि में हुआ।

इस विधान में भगवान के 108 नाममंत्र के 108 अर्घ्य हैं उसके बाद जयमाला है। जयमाला बहुत ही भावपूर्ण है इसमें समवसरण की सभा का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है—

असंख्य देव देवियाँ जिनेन्द्र अर्चना करें।
वहाँ तिर्यंच संख्य सर्व वैरभाव को हरें।।
अनाथ नाथ ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो ! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।

पुनः बड़ी जयमाला है। जिसमें एकेन्द्रिय भव से लेकर पंचेन्द्रिय भव के क्षुद्रभवों का सुन्दर वर्णन है। जयमाला को पढ़कर भक्ति के साथ-साथ स्वाध्याय का भी पूरा लाभ मिल जाता है। इस जयमाला को पढ़कर यह भावना भानी है कि हे भगवन् हमें भी अब मोहरूपी अज्ञान को दूर करके आत्मा के अनन्त गुण को प्रकट करना है और मृत्यु पर विजय प्राप्त करना है।

बड़ी जयमाला के बाद प्रशस्ति है जिसमें पूज्य माताजी ने लिखा है कि वीर नि. सं. 2539 में चैत्र शुक्ला ग्यारस को यह विधान पूर्ण किया है—

वीराब्द पचीस सौ उनतालिस में, शुभ चैत्र शुक्ल एकादशि में।
श्री सुमतिनाथ विधान पूर्ण, कर दिया सुप्रातः बेला में।।
शाश्वत तीर्थ अयोध्या है जिन-जन्मभूमि प्रभु भक्ती से।
यह अतिशायी पूजा विधान, रच दिया तीर्थंकर भक्ती से।।

प्रशस्ति के बाद इसमें तीर्थंकर सुमतिनाथ की गर्भ, जन्म, दीक्षा एवं केवलज्ञान से पवित्र शाश्वततीर्थ अयोध्या तीर्थक्षेत्र की पूजा है। अन्त में श्री सुमतिनाथ भगवान की एवं अयोध्या तीर्थ की मंगल आरती है।

इस प्रकार इस विधान में कुल 3 पूजा, 108 अर्घ्य एवं 4 जयमाला है। यह विधान भी महिमाशाली विधान है। इस विधान को करने, कराने वाले सभी भव्य जीव नियम से एक दिन अर्हन्त्य लक्ष्मी को प्राप्त करेंगे। यह विधान सभी के जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि को प्राप्त करावे, यही मंगल भावना है। शताधिक विधानों की रचयित्री पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, जिनेन्द्रदेव से यही मंगल प्रार्थना है।

आभार

इस ग्रंथ के प्रकाशन हेतु पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन गुरुकुल-महाराजगंज, हैदराबाद के प्रमुख श्री मांगीलाल जी बाबूलाल जी विजय कुमार पहाड़े, होटल राजधानी, सिदयम्बर बाजार, हैदराबाद ने आर्थिक सौजन्य प्रदान किया एतदर्थ हम आपके ज्ञानदान की भावनाओं का सम्मान करते हुए संस्थान की ओर से आपके प्रति बहुत-बहुत धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित करते हैं। आगे भी इसी प्रकार ग्रंथ प्रकाशन व धर्म कार्यों में आप अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करते रहें, यही मंगल भावना है।

-सम्पादक

हार्दिक उद्गार

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नमः श्री वर्धमानाय, निर्धूत कलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां, यद्विद्या दर्पणायते।।

बीसवीं शताब्दी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज हुए हैं। जिनकी चर्या चतुर्थकालीन सम मुनियों के समान थी। इनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम पाकर, स्वनाम को सार्थक करते हुए परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त करके, ग्रंथों का खूब स्वाध्याय करके, अपने ज्ञान को परिपक्व करके 'सहस्रनाम मंत्र' की रचना से अपनी लेखनी का शुभारम्भ करके अब तक छोटे-बड़े सभी ग्रंथों को मिलाकर 400 ग्रंथों की रचना की है।

आज के वैज्ञानिक युग में पारस टी. वी. चैनल के माध्यम से लोग घर बैठे पूज्य माताजी के मुखारविन्द से प्रतिदिन ज्ञानामृत का पान करते हैं। जब वे हस्तिनापुर आकर पूज्य माताजी का दर्शन करते हैं, तो गद्गद् होकर कहते हैं कि माताजी हम तो आपके शुद्ध शास्त्रीय, आगमानुसार प्रवचन सुनकर धन्य हो गए।

वास्तव में पूज्य माताजी ने भगवान महावीर की दिव्यध्वनि से निकली द्वादशांग वाणी को जिन्हें पूर्वाचार्यों ने ग्रंथरूप में लिपिबद्ध किया है उसी को आत्मसात करके, जन-जन के हिताय प्रवचन के द्वारा तथा ग्रंथों के द्वारा प्रदान कर रही हैं। अष्टसहस्री जैसे क्लिष्ट न्याय के ग्रंथ का अनुवाद करके पूज्य माताजी ने एक महान् कार्य किया है। विद्वद्वर्ग, युवावर्ग, बालवर्ग सभी के लिए पूज्य माताजी ने समयसार, नियमसार की टीका, कल्पद्रुम, इन्द्रध्वज आदि विधान, प्रतिज्ञा, परीक्षा, जीवनदान आदि उपन्यास एवं बालविकास के 4 भाग, जैसी पुस्तकें लिखकर सर्वांगीण ज्ञान का प्रचार प्रसार किया है। 24 तीर्थंकर विधानों की श्रृंखला में यह पाँचवे तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ भगवान का विधान है।

मेरा परम सौभाग्य है कि पूज्य माताजी की कुल परम्परा में जन्म लेकर, उन्हें गुरुरूप में पाकर और उनसे ज्ञानामृत को प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य किया है। सच्चे देव, शास्त्र, गुरु के प्रति भक्ति को करते हुए अपनी नारी पर्याय को सफल करूँ यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना करते हुए, ज्ञान की भण्डार पूज्य माताजी के चरणों में कोटि-कोटि नमन करती हूँ।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	श्री सुमतिनाथ स्तोत्र (श्री समन्तभद्राचार्य विरचित)	1
3.	पद्यानुवाद (गणिनी ज्ञानमती)	2
4.	अर्हंत पूजा	3
5.	श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर पूजा	8
6.	पंचकल्याणक अर्घ्य	10
7.	अथ 108 अर्घ्य	11
8.	जयमाला	24
9.	बड़ी जयमाला	27
10.	प्रशस्ति	30
11.	श्री अयोध्या तीर्थक्षेत्र पूजा	31
12.	तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ की आरती	39
13.	अयोध्या तीर्थ की आरती	40

मण्डल का नक्शा

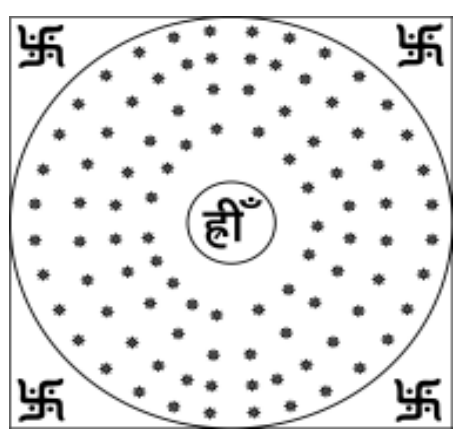

कुल पूजा–3, अर्घ्य 108, पूर्णार्घ्य–1, जयमाला–4।

श्री सुमतिनाथ विधान

मंगलाचरण

नय–प्रमाणैः सकलं सुतत्त्वं, प्रकाशयन् यो जगतामुदेति।
सः सर्वलोकैकविभास्वराख्यां, वन्दे सुमत्यै सुमतिं जिनं तम्।।1।।

श्रीसुमतिजिन स्तोत्र

(श्रीसमन्तभद्राचार्य–विरचितं)

अन्वर्थसंज्ञः सुमति-र्मुनिस्त्वं, स्वयं मतं येन सुयुक्तिनीतम् ।
यतश्च शेषेषु मतेषु नास्ति, सर्वक्रिया-कारक-तत्त्वसिद्धिः।।1।।

अनेक-मेकं च तदेव तत्त्वं, भेदान्वय-ज्ञान-मिदं हि सत्यम् ।
मृषोपचारोऽन्यतरस्य लोपे, तच्छेष-लोपोऽपि ततोऽनुपाख्यम्।।2।।

सतः कथंचित्-तदसत्त्व-शक्तिः, खे नास्ति पुष्पं तरुषु प्रसिद्धम्।
सर्वस्वभाव-च्युत-मप्रमाणं, स्ववाग्-विरुद्धं तव दृष्टितोऽन्यत्।।3।।

न सर्वथा नित्य-मुदेत्यपैति, न च क्रियाकारक-मत्र युक्तम् ।
नैवासतो जन्म सतो न नाशो, दीपस्तमः पुद्गल-भावतोऽस्ति।।4।।

विधि-र्निषेधश्च कथंचिदिष्टौ, विवक्षया मुख्य-गुण-व्यवस्था।
इति प्रणीतिः सुमतेस्तवेयं, मति-प्रवेकःस्तुवतोऽस्तु नाथ।।5।।

पद्यानुवाद (गणिनी ज्ञानमती)

हे सुमतिनाथ! आपका सार्थक सुनाम है।
सुयुक्ति सहित आप मत स्वयं सुमान्य है।।
क्योंकि क्रिया व कारक जो तत्त्व कहे हैं।
सब शेष मतों में न उनकी सिद्धि हुई है।।1।।
अनेक और एकरूप वही तत्त्व है।
वह भेद तथा अन्वय ज्ञान से ही सत्य है।।
उपचार कथन मिथ्या एक का अभाव हो।
हो शेष का अभाव भी फिर तत्त्व अकथ हो।।2।।
सत् वस्तु में कथंचित् असत्त्वशक्ति है।
आकाश में कुसुम नहीं वृक्षों में दिखे हैं।।
यदि तत्त्व सब स्वभाव-शून्य अप्रमाण है।
तव मत से अन्य मत प्रभो! स्ववचविरुद्ध हैं।।3।।
जो नित्य सर्वथा न वो जन्मे न नष्ट हो।
उसमें न क्रिया कारक युक्ती से घटित हों।।
नहिं जन्म असत् का व सत् का नाश नहीं है।
दीपक बुझा तो तिमिर भी पुद्गलमयी ही है।।4।।
अस्तित्व व नास्तित्व कथंचित् ही इष्ट हैं।
वक्ता की इच्छा से ही मुख्य गौणरूप हैं।।
हे सुमतिनाथ! आपकी यह कथन पद्धती।
मुझ स्तुतिकर्ता की हो उत्कृष्टतम मती।।5।।

पूजा नं. 1

अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंक पंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुची से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तू।
पीयूष तुल्य चरु लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योती।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योती।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नी विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।
मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्तिवश नेत्र हजार करके।
बाहू हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

-दोहा-

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

-शम्भु छंद-

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।

जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सौ हैं।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसु मंगलद्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चउ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभु सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा–

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।1।।

।इत्याशीर्वादः।

पूजा नं. 2

श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर पूजा

–अथ स्थापना –गीता छंद –

श्रीसुमति तीर्थंकर जगत में, शुद्धमति दाता कहे।
निज आतमा को शुद्ध करके, लोक मस्तक पर रहें।।
मुनि चार ज्ञानी भी सतत, वंदन करें संस्तवन करें।
हम भक्ति से थापें यहाँ, प्रभु पद कमल अर्चन करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टकं –गीता छंद

प्रभु चार गतियों में बहुत ही, घूमकर अब थक चुका।
इस हेतु तुम पद शरण लेकर, नीर से पूजूँ मुदा।।
हे सुमति जिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

एकेन्द्रियादिक देह में, दुःख दाव से संतप्त हो।
प्रभु गंध से पद चर्चते, तुम पाद छाया सुलभ हो।।हे.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिन्द्र से भि निगोद तक, सुख दुःखमयी सब पद धरे।
अक्षय सुपद के हेतु भगवन्! पुंज अक्षत के धरे।।हे.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध अयश से खिन्न हो, नहिं स्वात्मगुण यश पा सका।
बहुविध महकते पुष्प सुंदर, अतः चरणों में रखा।।हे.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू इमरती पूरियाँ, फेनी मलाई खीर से।
नहिं तृप्ति पाई इसलिए, नेवज चढ़ाऊँ प्रीति से।।
हे सुमति जिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक अंधेरा दूर करता, एक कोठे का अरे।
तुम आरती करते सकल, अज्ञानतम हरता खरे।।हे.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वरधूप खेते अग्नि में, सब कर्म भस्मीभूत हों।
निज आत्म समरस प्राप्त हो, फिर मोह बैरी दूर हों।।हे.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम पिस्ता सेव केला, आम दाड़िम फल लिया।
बस मोक्षफल की आश लेकर, आपको अर्पण किया।।हे.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प में, बहुरत्न आदि मिलाय के।
मैं अर्घ अर्पण करूँ प्रभु को, 'ज्ञानमति' हर्षाय के।।हे.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमानंद सुख लाभ, मिले सर्वसुख सम्पदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद –

पुरी अयोध्या पिता मेघरथ, सती मंगला माता।
श्रावण शुक्ल द्वितीया तिथि में, गर्भ बसे जग त्राता।।
इन्द्र स्वयं सुरगण सह आये, मात पिता को पूजें।
पुनर्जन्म के नाश हेतु हम, गर्भकल्याणक पूजें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाद्वितीयायां श्रीसुमतिनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल एकादशि तिथि में, जन्म लिया तीर्थेश्वर।
सुरपति जिन बालक को लेकर, बैठे ऐरावत पर।।
सुरगिरि पहुँचे जन्म महोत्सव, किया इन्द्रगण मिलकर।
जन्म कल्याणक मैं नित पूजूँ, मिले जन्म अविनश्वर।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां श्रीसुमतिनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मरण पाय विरती हो, इन्द्र सभी मिल आये।
सुदि नवमी वैशाख तिथी, अभयंकरि पालकि लाये।।
प्रभू सहेतुक वन में पहुँचे, बेला कर दीक्षा ली।
दीक्षा कल्याणक जजते ही, मिले स्वात्मगुणशैली।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लानवम्यां श्रीसुमतिनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र सुदी ग्यारस उद्यान, सहेतुक में प्रभु पहुँचे।
तरु प्रियंगु के नीचे तिष्ठे, केवल रवि बन चमके।।
धनपति समवसरण रच करके, ज्ञानकल्याणक पूजें।
गंधकुटी में सुमति जिनेश्वर, पूजत भव से छूटें।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां श्रीसुमतिनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल ग्यारस अपराण्हे, सम्मेदाचल से ही।
मृत्युनाश मृत्युंजय होकर, स्वात्मा में तिष्ठे ही।।
सुमतिनाथ का मोक्षकल्याणक, इन्द्र जजें भक्ती से।
मैं पूजूँ इस कल्याणक को, नशें कर्म युक्ती से।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां श्रीसुमतिनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

सुमति सुमतिदाता प्रभो! तीर्थंकर परमेश!।
जजूँ मोक्षपद हेतु मैं, जहाँ न दुख लवलेश।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ १०८ अर्घ्य

–सोरठा –

गणपति मुनिपति वंद्य, सुरपति नरपति से नमित।
पूजूं भक्ति अमंद, आनंद कंद जिनंद को।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–सोरठा –

दिव्यध्वनी के नाथ, अठरह महभाषा कही।
लघू सात सौ भाष, सुमतिनाथ को नित जजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय सुंदर आप, अतः 'दिव्य' गणधर कहें।
नशें कर्म अभिशाप, पूजत हो जिनसंपदा।।2।।

ॐ ह्रीं दिव्याय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय पावन वाच, 'पूतवाक्' प्रभु आप हैं।
नमत मिले गुण सांच, स्वात्म सुधारस की नदी।।3।।

ॐ ह्रीं पूतवाचे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शासन परम पवित्र, सुमतिनाथ का लोक में।
कर्मारति लवित्र, पूजत आत्म पवित्र हो।।4।।

ॐ ह्रीं पूतशासनाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन आत्मा नाथ, मुझको भी पावन करो।
नमूँ नमूँ नत माथ, अर्घ चढ़ाकर पूजहूँ।।5।।

ॐ ह्रीं पूतात्मने श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमज्योति' भगवान, केवलज्ञान प्रकाशमय।
नमूँ नमूँ गुणखान, लहूँ ज्ञानज्योती परम।।6।।

ॐ ह्रीं परमज्योतिषे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित में अध्यक्ष, 'धर्माध्यक्ष' प्रसिद्ध हो।
धर्म न हो विध्वस्त, पूजूँ नित्य परोक्ष ही।।7।।

ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय दमन करंत, प्रभो! 'दमीश्वर' आप हैं।
शम दम धर्म दिशंत, नमूँ जितेन्द्रिय हेतु हैं।।8।।

ॐ ह्रीं दमीश्वराय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीपति' शिवश्री नाथ, स्वर्गमोक्ष श्री देत हो।
मिले सभी गुण साथ, पूजूँ सुमति जिनेश को।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपतये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य ऐश्वर्य, धरें आप 'भगवान' हैं।
पुनः मोक्ष स्थैर्य, लिया जजूँ प्रभु आप को।।10।।

ॐ ह्रीं भगवते श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्रों से पूज्य, 'अर्हन्' सिद्ध स्वरूप हो।
पाऊँ निजपद पूज्य, पूजूँ तुम पदपद्म को।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हते श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानदर्शनावर्ण, रज हैं धूली के सदृश।
इनका कीना नाश, 'अरज' आपको नित जजूँ।।12।।

ॐ ह्रीं अरजसे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब आवरण विनाश, सिद्ध लोक में जा बसें।
पूर्ण करो मम आश, जजूँ 'विरज' पद हेतु मैं।।13।।

ॐ ह्रीं विरजसे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन तीर्थ विशुद्ध, 'शुचि' ब्रह्मा में लीन हो।
मेरा मन हो शुद्ध, पूजूँ त्रिकरण शुद्धि से।।14।।

ॐ ह्रीं शुचये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवदधि तिरते भव्य, जिससे तीर्थ प्रसिद्ध है।
प्रभो 'तीर्थकृत' नव्य, जजूँ तिरूँ भवसिंधु से।।15।।

ॐ ह्रीं तीर्थकृते श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान अनंत, गुण अनंत के तुम धनी।
नमूँ नमूँ भगवंत, अविकल गुणनिधि हेतु मैं।।16।।

ॐ ह्रीं केवलिने श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रों के पति आप, मुनि 'ईशान' तुम्हें कहें।
भक्त बने निष्पाप, पूजूँ समरस हेतु मैं।।17।।

ॐ ह्रीं ईशानाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट विधार्चन योग्य, मुनि 'पूजार्ह' तुम्हें कहें।
पाऊँ निजपद योग्य, इसी हेतु पूजा करूँ।।18।।

ॐ ह्रीं पूजार्हाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घात घातिया कर्म, आप 'स्नातक' मान्य हैं।
मिले मोक्ष का मर्म, तुम पद पूजूँ भक्ति से।।19।।

ॐ ह्रीं स्नातकाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्म, त्रिविध मलों विरहित प्रभो!।
नमूँ 'अमल' दें शर्म, मेरा मन पावन करें।।20।।

ॐ ह्रीं अमलाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमित दीप्ति से कांत, हे 'अनंतदीप्ति' प्रभो!।
हो गुणदीप्ति अनंत, नमूँ तुम्हें बहु प्रीति से।।21।।

ॐ ह्रीं अनंतदीप्तये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण सुज्ञान स्वरूप, 'ज्ञानात्मा' लोकाग्र में।
नमूँ नमूँ चिद्रूप, ज्ञानज्योति प्रगटित करूँ।।22।।

ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंबुद्ध' भगवान्, गुरु बिन ज्ञान अपूर्व था।
रत्नत्रय निधिमान, बनूँ आपकी भक्ति से।।23।।

ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन जन के नाथ, आप 'प्रजापति' मान्य हो।
मुझको करो सनाथ, चिन्मय गुण विकसित करो।।24।।

ॐ ह्रीं प्रजापतये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवबंधन से 'मुक्त', पूर्ण स्वतंत्र तुम्हीं प्रभो।
मुझको करिये मुक्त, चरणों में आश्रय चहूँ।।25।।

ॐ ह्रीं मुक्ताय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाईस परिषह कष्ट, सहने में सक्षम हुये।
अतः कहाये 'शक्त', सहन शक्ति हित मैं जजूँ।।26।।

ॐ ह्रीं शक्ताय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब बाधा उपसर्ग, रहित आप परमातमा।
'निराबाध' संसर्ग, मेरी सब बाधा हरे।।27।।

ॐ ह्रीं निराबाधाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल कला से शून्य, रत्नवृष्टि माँ के महल।
कवलाहार विशून्य, 'निष्कल' की पूजा करूँ।।28।।

ॐ ह्रीं निष्कलाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवेनश्वर' त्रैलोक्य, ईश्वर पूज्य त्रिलोक में।
हो जाऊँ अक्षोभ्य, भेदविज्ञान प्रकाश से।।29।।

ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्माञ्जन से शून्य, अठरह दोष विमुक्त हो।
हो जाऊँ भव शून्य, जजूँ 'निरञ्जन' देव को।।30।।

ॐ ह्रीं निरञ्जनाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्ज्योति' चिद्रूप, लोक अलोक विलोकते।
चिन्मय ज्योतिस्वरूप, पाऊँ आतम ज्योति मैं।।31।।

ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वापर अविरोध, स्याद्वादमय हैं वचन।
'निरुक्तोक्ति' गतशोच, नमूँ स्वात्मसंपति मिले।।32।।

ॐ ह्रीं निरुक्तोक्तये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'निरामय' आप, सभी रोग से दूर हो।
नमत नशें सब पाप, पूर्ण स्वस्थता प्राप्त हो।।33।।

ॐ ह्रीं निरामयाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचलस्थिति' भगवान, लोकशिखर पर तिष्ठते।
मिले भेद विज्ञान, नमते मन एकाग्र हो।।34।।

ॐ ह्रीं अचलस्थितये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी चरित्र से नाथ! नहीं चलित हों स्वप्न में।
ज्ञानपूर्णतया साथ, प्रभु 'अक्षोभ्य' जजूँ सदा।।35।।

ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकशिखर के अग्र, तिष्ठ रहे 'कूटस्थ' हो।
मोह शैल को वज्र, स्थिर रूप तुम्हें जजूँ।।36।।

ॐ ह्रीं कूटस्थाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमनागमन विहीन, 'स्थाणु' जन्म मृत्यू रहित।
रोग शोक हो क्षीण, पूजत सुस्थिर पद मिले।।37।।

ॐ ह्रीं स्थाणवे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षय' नाश विहीन, इन्द्रिय विरहित आप हो।
अक्षय पद सुख लीन, नमूँ पूर्ण सुख हेतु मैं।।38।।

ॐ ह्रीं अक्षयाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन ऊपर आप, ले जाते हैं 'अग्रणी'।
मुझको भी हे नाथ! चरणों में स्थान दो।।39।।

ॐ ह्रीं अग्रण्ये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों को प्रभु मोक्ष, पहुँचाते हो 'ग्रामणी'।
नमत मिले सब सौख्य, शिवपुर मार्ग प्रशस्त हो।।40।।

ॐ ह्रीं ग्रामण्ये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नेता' आप महान्, शिवपथ दिखलाते सदा।
हमें करो धनवान, रत्नत्रय निधि देय के।।41।।

ॐ ह्रीं नेत्रे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांगमय शास्त्र, रचा 'प्रणेता' हो प्रभो!।
मिले ध्यानमय शस्त्र, मोहमल्ल नाशूँ त्वरित।।42।।

ॐ ह्रीं प्रणेत्रे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न्याय-नीति के शास्त्र, उपदेशा है विश्व को।
'न्यायशास्त्रकृत' नाथ! जजत न्याय मुझ को मिले।।43।।

ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित उपदेशी देव, 'शास्ता' गुरु जग मान्य हो।
मेटो अहित कुटेव, नमूँ स्वात्महित मैं तुम्हें।।44।।

ॐ ह्रीं शास्त्रे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तुस्वभावी धर्म, क्षमादि रत्नत्रय दया।
'धर्मपती' दो शर्म, चउविध धर्म प्रचार हो।।45।।

ॐ ह्रीं धर्मपतये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसहित हो 'धर्म्य' धर्मरूप परिणत हुये।
मिले मोक्ष का मर्म, नमूँ प्रभो! सुख शांति दो।।46।।

ॐ ह्रीं धर्म्याय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मस्वरूप जिनेश, 'धर्मात्मा' त्रिभुवन गुरु।
पूजन करूँ हमेश, धर्मरूप मैं भी बनूँ।।47।।

ॐ ह्रीं धर्मात्मने श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित तीर्थ महान, उसके कर्ता नाथ हैं।
'धर्मतीर्थकृत्' नाम, स्वात्म शुद्धि हेतू नमूँ।।48।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकृते श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मध्वजा है नित्य, 'वृषध्वज' माने लोक में।
आत्मधर्म हो नित्य, मैं पूजूँ गुणहेतु नित।।49।।

ॐ ह्रीं वृषध्वजाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अहिंसा रूप, उसके स्वामी आप ही।
मिले स्वात्म चिद्रूप, 'वृषाधीश' तुमको नमूँ।।50।।

ॐ ह्रीं वृषाधीशाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सौमराजी छंद–

महापुण्य का चिन्ह है आपका ही।
नमूँ नित्य 'वृषकेतु' रोगादि नाशो।।51।।

ॐ ह्रीं वृषकेतवे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषायुध' महामृत्यु मारा धरम से।
जरा मृत्यु नाशो, हमारे जजूँ मैं।।52।।

ॐ ह्रीं वृषायुधाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया धर्म वर्षा, अतः 'वृष' तुम्हीं हो।
हमें बोधि देवो, नमूँ भक्ति से मैं।।53।।

ॐ ह्रीं वृषाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'वृषपती' हो, अहिंसा के स्वामी।
नमूँ मैं मुझे पूर्ण आरोग्य देवो।।54।।

ॐ ह्रीं वृषपतये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा भव्य को पोषते आप भर्ता।
नमूँ सद्गुणों को, भरो नाथ मुझमें।।55।।

ॐ ह्रीं भर्त्रे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप वृषभांक सद्धर्म चिन्हित।
नमूँ धर्म मेरे, अनंते मिलेंगे।।56।।

ॐ ह्रीं वृषभांकाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषोद्भव' धरा धर्म पूरब भवों में।
जजूँ मैं मुझे आत्म संपत्ति देवो।।57।।

ॐ ह्रीं वृषोद्भवाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'हीरण्यनाभी' नमूँ मैं।
सुनाभी सभी से अधिक श्रेष्ठ सुंदर।।58।।

ॐ ह्रीं हिरण्यनाभये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! ज्ञान से व्याप्त आत्मा जगत में।
नमूँ 'भूतआत्मा' सभी शोक नाशो।।59।।

ॐ ह्रीं भूतात्मने श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी जीव रक्षो, प्रभो! 'भूतभृद्' हो।
दयादृष्टि कीजे, पुनर्जन्म ना हो।।60।।

ॐ ह्रीं भूतभृते श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमूँ 'भूतभावन' दरश शुद्धि आदी।
धरीं सोलहों भावना, श्रेष्ठ स्वामी।।61।।

ॐ ह्रीं भूतभावनाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभव' आपका जन्म उत्कृष्ट माना।
नमूँ मैं बनू श्लाघ्य शिवमार्ग पाके।।62।।

ॐ ह्रीं प्रभवाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विभव' दूर संसार से आप हैं ही।
सफल जन्म मेरा करो शीश नाऊँ।।63।।

ॐ ह्रीं विभवाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विभा ज्ञानदीप्ती, अतः आप 'भास्वान्'।
मुझे पूर्ण विज्ञान दो याचना ये।।64।।

ॐ ह्रीं भास्वते श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृदय में हुये भव्य के 'भव' कहाये।
सदा चित्त में आप तिष्ठो नमूँ मैं।।65।।

ॐ ह्रीं भवाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी के हृदय में रहों 'भाव' तुम हो।
हमारे हृदय के तिमिर को विनाशो।।66।।

ॐ ह्रीं भावाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भवांतक' स्वामी, किया अंत भव का।
भवांभोधि से भक्ति ही तारती है।।67।।

ॐ ह्रीं भवान्तकाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रसू सौध में मास नौ रत्न वर्षे।
प्रभू नाम 'हीरण्यगर्भा' नमूँ मैं।।68।।

ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें सेव माँ की, सुरी श्री ह्रि आदी।
नमूँ नाथ 'श्रीगर्भ' श्री प्राप्त होवे।।69।।

ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोकैक साम्राज्य पाया तुम्हीं ने।
नमूँ में 'प्रभूताविभव' सौख्य देवो।।70।।

ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभव' आप संसार से हीन स्वामी।
नमूँ पंच संसार का नाश कीजे।।71।

ॐ ह्रीं अभवाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंप्रभु' चिदात्मा, स्वयं नाथ सबके।
स्वयं सिद्ध कीजे, नमूँ भक्ति से मैं।।72।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभूतातमा' आप, अस्ती स्वभावी।
मुझे सिद्धि दीजे नमूँ शीश नाके।।73।।

ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'भूतनाथा', सभी पे दयालू।
दया दान दीजे, सुचारित्र पूरो।।74।।

ॐ ह्रीं भूतनाथाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्प्रभु' त्रिलोकेश सुख शांति दीजे।
नमूँ मैं सभी रोग शोकादि नाशो।।75।।

ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं नाथ 'सर्वादि' हो श्रेष्ठ सबमें।
नमूँ मैं सुसम्यक्त्व निधि दान दीजे।।76।।

ॐ ह्रीं सर्वादये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकैवल्यदृक् से सभी विश्व देखा।
नमूँ 'सर्वदृक्' शुद्ध सम्यक्त्व कीजे।।77।।

ॐ ह्रीं सर्वदृशे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी जीव हितकारि, हो 'सार्व' जग में।
नमूँ चार आराधना पूर्ण कीजे।।78।।

ॐ ह्रीं सार्वाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोकं त्रिकालं, सभी वस्तु ज्ञाता।
जजूँ आप 'सर्वज्ञ' मेटो असाता।।79।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'सर्वदर्शन' सुसम्यक्त्व क्षायिक।
मेरे ज्ञानचारित्र सत्यार्थ कर दो।।80।।

ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी वस्तु प्रतिबिंबती आप में ही।
मेरा ज्ञान कैवल्य कीजे जजूँ मैं।।81।।

ॐ ह्रीं सर्वात्मने श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी प्राणि के ईश, वंदूं सदा मैं।
प्रभो 'सर्वलोकेश' भवदुःख मेटो।।82।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी लोक को जानते 'सर्ववित्' हो।
प्रभो ज्ञानज्योति मुझे दो जजूँ मैं।।83।।

ॐ ह्रीं सर्वविदे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयी पंच संसार के जो जजूँ मैं।
प्रभो 'सर्वलोकैकजित्' शोक नाशो।।84।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकजिते श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुगति' मुक्ति पंचम गती प्राप्त की है।
सुगति में गमन हो सुमति हेतु पूजूँ।।85।।

ॐ ह्रीं सुगतये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत' शास्त्र सम्यक् प्रगट आपसे हैं।
तथा आप विख्यात जग में जजूँ मैं।।86।।

ॐ ह्रीं सुश्रुताय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी की सुनी प्रार्थना आप 'सुश्रुत्'।
मुझे स्वात्म संपत्ति दीजे नमूँ मैं।।87।।

ॐ ह्रीं सुश्रुते श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुवाक्' सप्तभंगी युता दिव्य वाणी।
उसी में रमूं मैं इसी हेतु वंदूँ।।88।।

ॐ ह्रीं सुवाचे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! पंच आचार से 'सूरि' माने।
नमूँ आपको बुद्धि सम्यक् करीजे।।89।।

ॐ ह्रीं सूरये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बहुश्रुत' सभी शास्त्र के मर्मज्ञाता।
तुम्हीं से हुआ श्रुत नमूँ ज्ञान हेतू।।90।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुताय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमूँ आप 'विश्रुत' जगत् में प्रसिद्धा।
सभी इन्द्र धरणेन्द्र से वंद्य वंदूँ।।91।।

ॐ ह्रीं विश्रुताय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधो मध्य ऊरध त्रिजग व्याप्त कीना।।
नमूँ 'विश्वतःपाद' ज्ञानी किरण से।।92।।

ॐ ह्रीं विश्वतःपादाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिजग में हि मस्तक त्रिलोकाग्र राजें।
नमूँ 'विश्वशीर्षा' करो मेरी रक्षा।।93।।

ॐ ह्रीं विश्वशीर्षाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी प्राणियों की सुनी आप अर्जी।
नमूँ मैं 'शुचिश्रव' हमें बोधि देवो।।94।।

ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सहसशीर्ष' भगवन्! अनंते सुखी हो।
मुझे स्वात्म सुख दीजिये मैं जजूँ अब।।95।।

ॐ ह्रीं सहस्रशीर्षाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजात्मा को जाना चराचर सभी भी।
प्रभो! 'क्षेत्रज्ञा' मैं नमूँ स्वस्थ हेतू।।96।।

ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंते पदारथ तुम्हीं जानते हो।
'सहस्राक्ष' स्वामिन्! नमूँ प्रीति से मैं।।97।।

ॐ ह्रीं सहस्राक्षाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंते बली नंत किरणों सुव्यापी।
'सहसपात्' वंदूं मुझे शक्ति दीजे।।98।।

ॐ ह्रीं सहस्रपदे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं भूतभावी व संप्रति के स्वामी।
नमूँ 'भूतभव्यभवद्भर्तृ' तुमको।।99।।

ॐ ह्रीं भूतभव्यभवद्भर्त्रे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुविद्या अखिल के तुम्हीं नाथ माने।
अतः 'विश्वविद्यामहेश्वर' नमूँ मैं।।100।।

ॐ ह्रीं विश्वविद्यामहेश्वराय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

केवलज्ञान सुबुद्धि तुम, अति विस्तीर्ण प्रसिद्ध।
प्रभु 'वरिष्ठधी' तुम नमूँ, गुणमणि धरूँ समृद्ध।।101।।

ॐ ह्रीं वरिष्ठधिये श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अग्र पर तिष्ठते, अतिशय स्थिर नित्य।
इसीलिये 'प्रभु स्थेष्ठ' हो, नमत लहूँ सुख नित्य।।102।।

ॐ ह्रीं स्थेष्ठाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के गुरु आप हैं, नाथ 'गरिष्ठ' प्रधान।
स्वात्मामृत के पान से, बनूँ स्वस्थ अमलान।।103।।

ॐ ह्रीं गरिष्ठाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु प्रशंसनीया सुगुण, प्रभो 'श्रेष्ठ' तुम नाम।
अनुपम गुणनिधि हेतु मैं, नमूँ आप शिवधाम।।104।।

ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्मचक्षु से आप हैं, अतिशय सूक्ष्म जिनेश।
प्रभु 'अणिष्ठ' तुमको नमूँ, मिटे जगत् का क्लेश।।105।।

ॐ ह्रीं अणिष्ठाय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत्पूज्य वाणी विमल, प्रभु 'गरिष्ठगी' नाम।
मम रसना हो रसवती, शत शत करूँ प्रणाम।।106।।

ॐ ह्रीं गरिष्ठगिरे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती संसार को, नष्ट किया भगवान्।
नमूँ 'विश्वमुट्' आपको, पाऊँ सौख्य निधान।।107।।

ॐ ह्रीं विश्वमुचे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म सृष्टि रचना किया, आप 'विश्वसृट्' मान्य।
धर्म संपदा पूर्ण हो, नमते सुख धन धान्य।।108।।

ॐ ह्रीं विश्वसृजे श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

अष्टोत्तर शतगुण जजूं, प्रभु अनंत गुण वार्धि।
सुमतिनाथ को नित नमूं, मिटे सर्व भव व्याधि।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीदिव्यभाषापत्यादि–अष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीसुमतिनाथ–तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय नमः।**

(सुगंधित पुष्प या लौंग या पीले चावल से 108 बार,
27 बार या 9 बार जाप्य करें)

जयमाला

—दोहा—

चिन्मूरति परमात्मा, चिदानंद चिद्रूप।
गाऊँ गुणमाला अबे, स्वल्पज्ञान अनुरूप।।1।।

–नाराचछंद –

नमो नमो जिनेन्द्रदेव! आपको सुभक्ति से।
मुनीन्द्रवृंद आप ध्याय कर्मशत्रु से छुटें।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।2।।

अनंतदर्श ज्ञान वीर्य सौख्य से सनाथ हो।
अनादि हो अनंत हो जिनेश सिद्धिनाथ हो।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।3।।

अनादिमोह वृक्ष मूल को उखाड़ आपने।
प्रधान राग द्वेष शत्रु को हना सु आपने।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।4।।

महान रोग शोक कष्ट हेतु औषधी कहे।
अनिष्ट योग इष्ट का वियोग दुःख को दहे।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।5।।

अपूर्व चालिसे हि लाख पूर्व वर्ष आयु है।
सुतीन सौ धनुष प्रमाण तुंग देह आप हैं।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।6।।

सुचक्रवाक चिन्ह देह स्वर्ण के समान है।
तनू विहीन ज्ञानदेह सिद्ध शक्तिमान हैं।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।7।।

शतेन्द्र वृंद आपको सदैव शीश नावते।
गणीन्द्र वृंद आप को निजात्मा में ध्यावते।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।8।।

गणेश चामरादि एक सौ सुसोलहों सभी।
समस्त ऋद्धियों समेत आप भक्ति लीन ही।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।9।।

समस्त साधु तीन लाख बीस सहस संयमी।
निजात्म सौख्य हेतु नित्य स्वात्मध्यान लीन ही।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।10।।

प्रधान आर्यिका अनंतमत्ति नाम धारती।
सुतीन लाख तीस सहस आर्यिका महाव्रती।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।11।।

जिनेश भक्त तीन लाख श्रावकों कि भीड़ है।
सुपाँच लाख श्राविका मिथ्यात्व से विहीन हैं।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।12।।

असंख्य देव देवियाँ जिनेन्द्र अर्चना करें।
वहाँ तिर्यंच संख्य सर्व वैरभाव को हरें।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।13।।

सुनी सुकीर्ति आपकी अतेव संस्तुती करूँ।
अनंत जन्म के अनंत पापपुंज को हरूँ।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।14।।

जिनेन्द्र आप भक्ति से सदैव साम्य भावना।
सदैव स्वात्म ब्रह्म तत्त्व की करूँ उपासना।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।15।।

–दोहा –

सुमतिनाथ! तुम भक्ति से, मिले निजातम शक्ति।
रत्नत्रय युक्ती मिले, पुनः शीघ्र हो मुक्ति।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद–

जो सुमतिनाथ विधान भक्ती, से करेंगे भव्यजन।
वे मोह तम को दूर कर, सद्बुद्धि पाते भक्तजन।।
'सज्ज्ञानमति' भास्कर किरण से, लोक में यश पायेंगे।
आर्हन्त्य लक्ष्मी प्राप्त कर, शिवधाम को पा जायेंगे।।1।।

इत्याशीर्वादः

बड़ी जयमाला

—सोरठा—

जो पीते धर प्रीति, तुम पद भक्ति पियूष को।
पुनर्जन्म को नाश, अजर अमर पद को लहें।।1।।

—चाल शेर—

जैवंत तीर्थवंत मुक्तिकान्त जिनेश्वर।
जैवंत मूर्तिमंत धर्मकांत जिनेश्वर।।
जैवंत लोक अंत के पर्यन्त विराजें।
जैवंत हृदय ध्वांत हरण चन्द्र विभासें।।2।।

हे नाथ ! आज आपसे मैं प्रार्थना करूं।
मुझ जन्म मरण नाशिये यह भावना करूं।।
मैंने अनंत काल क्षुद्रभव में बिताया।
अब क्या कहूँ हे नाथ! मोहबलि ने सताया।।3।।
भू नीर अग्नि वायु साधारण वनस्पति।
ये सूक्ष्म औ बादर तथा प्रत्येक तरू भी।।
इन ग्यारहों में छै सहस बारह हैं भव सही।
ये क्षुद्रभव एकेन्द्रियों के मैं धरे यहीं।।4।।

दो इंद्रि जीव के कहे अस्सी प्रमाण हैं।
ते इंद्रि जीव के कहे भव साठ मान हैं।।
चौइंद्रियों के हैं कहे चालीस प्रमाणे।
पंचेन्द्रियों के क्षुद्रभव चौबीस बखाने।।5।।

छ्यासठ हजार तीन सौ छत्तीस भव कहे।
अंतर्मुहूर्त मात्र में ये, जन्म सब लहे।।
इन लब्धि अपर्याप्तकों की योनि जब धरा।
इक श्वांस के अट्ठारवें बस भाग में मरा।।6।।

हे नाथ! मैं सब योनियों में घूम चुका हूँ।
बस बार-बार जन्म से मैं ऊब चुका हूँ।।
त्रैलोक्य में बस एक आप जन्म शून्य हैं।
इस हेतु से मैं आप शरण ली प्रपूर्ण है।।7।।

देवाधिदेव आप सकल दोष दूर हो।
देवाधिदेव आप सकल सौख्य पूर हो।।
निज आतमा को आप ही परमातमा किया।
निज में ही आप मग्न हो निजधाम पा लिया।।8।।

क्रोधादि शत्रुओं को आपने दमन किया।
संपूर्ण कषायों को आपने शमन किया।
इंद्रिय विषय को जीत अतीन्द्रिय सुखी हुये।
प्रत्यक्ष ज्ञान से ही आप केवली हुये।।9।।

संपूर्ण उपद्रव टले हैं आप जाप से।
संपूर्ण मनोरथ फले हैं आप नाम से।।
प्रभु आपको न इष्ट का वियोग हो कभी।
होवे नहीं अनिष्ट का संयोग भी कभी।।10।।

सबके लिये आराध्य इष्ट आप ही कहे।
सबही अनिष्ट नष्ट हों क्षण मात्र ना रहें।।
संपूर्ण रोग शोक भी तुम भक्त के टलें।
धन धान्य अतुल सौख्य भी होंवे भले भले।।11।।

इस जग में मुक्ति अंगना के नाथ आप ही।
निज की अनंत ऋद्धियों के साथ आप ही।।
चैतन्य चमत्कार परमसौख्य धाम हो।
चिर्त्पिड हो अखंड हो त्रिभुवन ललाम हो।।12।।

मैं आपकी शरणागती में आज आ गया।
अपनी अमूल्य ज्ञान कला को भी पा गया।।

ये ज्ञान निधी भवदधी में डूब ना जावे।
करिये कृपा जो मुक्ति तक भी साथ में आवे।।13।।

हे नाथ ! मोहराज को अब दूर कीजिये।
निज के अखंड गुण समस्त पूर्ण कीजिये।।
मुझ शत्रु जो यमराज उसे चूर्ण कीजिये।
मुझ स्वात्म सुधारस प्रवाह पूर दीजिये।।14।।

—दोहा—

आत्यंतिक सुख शांतिमय, तीर्थंकर भगवान्।
'ज्ञानमती' लक्ष्मी मुझे, दे कीजे धनवान्।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—गीता छंद–

जो सुमतिनाथ विधान भक्ती, से करेंगे भव्यजन।
वे मोह तम को दूर कर, सद्बुद्धि पाते भक्तजन।।
'सज्ज्ञानमति' भास्कर किरण से, लोक में यश पायेंगे।
आर्हन्त्य लक्ष्मी प्राप्त कर, शिवधाम को पा जायेंगे।।1।।

इत्याशीर्वादः

प्रशस्ति

–शंभु छंद–

त्रिभुवन में धर्म वही उत्तम, जो श्रेष्ठ सुखों में धरता है।
सांसारिक सभी सौख्य देकर, मुक्ती पद तक पहुँचाता है।।
इस रत्नत्रयमय धर्मतीर्थ के, कर्ता तीर्थंकर बनते।
इनको प्रणमूँ मैं बार बार, ये सर्व आधि व्याधी हरते।।1।।

श्री महावीर के शासन में, श्री कुंदकुंद आम्नाय प्रथित।
सरस्वतीगच्छ गण बलात्कार से, जैन दिगम्बर धर्म विशद।।
इस परम्परा में सदी बीसवीं, के आचार्य प्रथम गुरुवर।
चारित्र चक्रवर्ती श्री शान्तीसागर सबके गुरू प्रवर।।2।।

इन प्रथमशिष्य पट्टाधिप श्री, गुरु वीरसागराचार्य हुए।
मुझको ये आर्यिका ज्ञानमती, करके अन्वर्थक नाम दिये।।
इन रत्नत्रय दाता गुरु को, है मेरा वंदन बार बार।
माँ सरस्वती को नित्य नमूँ, जिनका मुझ पर है बहूपकार।।3।।

वीराब्द पचीस सौ उनतालिस में, शुभ चैत्र शुक्ल एकादशि में।
श्री सुमतिनाथ विधान पूर्ण, कर दिया सुप्रातः बेला में।।
शाश्वत तीर्थ अयोध्या है जिन–जन्मभूमि प्रभु भक्ती से।
यह अतिशायी पूजा विधान, रच दिया तीर्थकर भक्ती से।।4।।

इस दुषमकाल के अन्त समय तक, जैनधर्म जयवंत रहे।
इस हस्तिनागपुर में तब तक, यह जंबूद्वीप स्थायि रहे।।
तब तक गणिनी ज्ञानमती कृति, भव्यों को संतुष्ट करे।
मुझ 'ज्ञानमती' केवल करके, मुझ में जिनगुण संपत्ति भरे।।5।।

इति श्रीसुमतिनाथविधानं संपूर्णं।

इति शं भूयात्।।

श्री अयोध्या तीर्थक्षेत्र पूजा

-अथ स्थापना-

(तर्ज-गोमटेश, जय गोमटेश.....)

आदिनाथ, जय आदिनाथ, मम हृदय विराजो-2
हम यही भावना करते हैं।
भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।
हो नगर नगर में प्रभु पूजा, सारी धरती भक्ति स्थल हो।।हम0।।1।।
युग की आदि में इन्द्रराज ने, नगरि अयोध्या रचवाई।
श्री नाभिराय मरुदेवि को पाकर, सारी जनता हरषाई।।
प्रभु आदिनाथ का जन्म याद कर, मेरा मन भी उज्ज्वल हो।।हम0।।2।।
श्री अजितनाथ अभिनंदन सुमती, जिन अनंत ने जन्म लिया।
इन्द्रों ने जिन शिशु को लेकर, मेरू गिरि पर अभिषेक किया।।
जिन जन्मभूमि का अर्चन कर, मेरा मन भी अति उज्ज्वल हो।।हम0।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अष्टक-

तर्ज-आवो बच्चों तुम्हें दिखायें.....

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।
सरयूनदि का जल अति शीतल, पद्मपराग सुवास मिला।
रागभाव मल धोवन कारण, धार करें मनकंज खिला।।

जलधारा से पूजा करते, पावें उज्ज्वल कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।1।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।
केशर घिस कर्पूर मिलाया, भ्रमर पंक्तियां आन पड़ें।
तीर्थक्षेत्र पूजन से नशते, कर्मशत्रु भी बड़े बड़े।।
चंदन से पूजा करते ही, पावें अविचल कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।2।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।
चंद्र चन्द्रिका सम सित तंदुल, पुंज चढ़ायें भक्ती से।
अमृतकणसम निज समकित गुण, पायें अतिशय युक्ती से।।
अक्षत से जिनक्षेत्र पूजते, पावें अक्षय कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ के।।3।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

वर्ण वर्ण के सुमन सुगंधित, पारिजात वकुलादि खिले।
काम व्यथा नश जाय क्षेत्र को, अर्पण कर नवलब्धि[1] मिले।।
पुष्पों से पूजा करते ही, पावें निजगुण कीर्ति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।4।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

रसगुल्ला रसपूर्ण अंदरसा, कलाकंद पयसार[2] लिये।
अमृतपिंड सदृश नेवज से, तीर्थक्षेत्र को यजन किये।।
चरु से पूजा करते ही जन, हरते क्षुध् की भीति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।5।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

हेमपात्र में घृत भर बत्ती, ज्योति जले तम नाश करे।
दीपक से आरति करते ही, हृदय पटल की भ्रांति हरे।।

1. क्षायिकज्ञान आदि नव क्षायिक लब्धियाँ। 2. मलाई।

करें आरती भक्ति भाव से, पावें आतमज्योति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।6।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

धूपघड़े में धूप जलाकर, अष्टकर्म को दग्ध करें।
निजआतम के भावकर्म मल, द्रव्यकर्म भी भस्म करें।।
धूप खेयकर पूजा करते, पावें सुरभित कीर्ति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।7।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतम तीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

फल अंगूर अनंनासादिक, सरस मधुर ले थाल भरे।
आत्म अतीन्द्रिय सुख इच्छुक हो, फल अर्पें बहु भक्ति भरे।।
फल से पूजा करते ही हम, पावें निजपद तीर्थ को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।8।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल अर्घ्य लिया।
केवल 'ज्ञानमती' पद हेतू, जिनपद पंकज अर्घ्य किया।।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पावें शिवपद तीर्थ को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।9।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-सोरठा-

सरयूनदि का नीर, कंचन झारी में भरा।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल कल्हार, पुष्पांजलि करते यहाँ।
मिले सौख्य भंडार, यश सौरभ चहुंदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पांच टोंक के पांच अर्घ्य

-नरेन्द्र छंद-

आदिनाथ के गर्भागम के, छह महीने पहले ही।
इन्द्राज्ञा से धनपति ने आ, रत्नों की वर्षा की।।
चैत्रवदी नवमी[1] जिन जन्में, किया महोत्सव सुरगण।
ऋषभदेव जन्मस्थल पूजत, मिले आत्मनिधि तत्क्षण।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवगर्भजन्मकल्याणकेभ्यः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ ने जन्म लिया जब, सुरपति आसन कंपे।
जितशत्रु पितु माता विजया, पुलकित मन आनंदे।।

1. आदिनाथ के आषाढ़ कृ. 2 गर्भ, चैत्र कृ0 9 जन्म, चैत्र कृ. 9 तप, फाल्गुन कृ. 11 ज्ञान, माघ कृ. 14 मोक्ष।

माघ सुदी दशमी तिथि[1] उत्तम, न्हवन हुआ मेरू पर।
साकेतापुरि को हम पूजें, जजते जिसे पुरंदर।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथगर्भजन्मकेवलकल्याणकेभ्यः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जिन जननी सिद्धार्था[2] माता, इन्द्रों से भी पूजित।
श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धी, लक्ष्मी देवी से सेवित।।
पिता स्वयंवर भी हर्षित हो, रत्नों को नित बांटें।
हम भी अभिनंदन जिनवर को, पूजत संकट काटें।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथगर्भजन्मकेवलकल्याणकेभ्यः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि द्वितिया गर्भागम, सुमंगला माँ हर्षित।
चैत्र सुदी ग्यारस प्रभु जन्में, पिता मेघरथ पुलकित।।
सुदि नवमी वैशाख सुदीक्षा, चैत्र सुदी ग्यारस में।
केवलज्ञान मोक्ष कल्याणक सुमतिनाथ को प्रणमें।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथगर्भजन्मतपकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पुरी विनीता में अनंतप्रभु, सिंहसेन घर जन्मे।
जयश्यामा माता आनंदित, ज्येष्ठ वदी बारस[3] में।।
जन्मदिवस दीक्षा प्रभु चैत्र अमावस केवलज्ञानी।
इसही तिथि में मोक्ष कल्याणक जजत बनें निजज्ञानी।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथगर्भजन्मतपकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीअनंतानंततीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यापुर्यै नमः।**

1. ज्ये. कृ. अमावस्या गर्भ, माघ माघ शु. 10 जन्म, माघ शु. 9 तप, पौ. शु. 11 केवलज्ञान, चैत्र शु. 5 मोक्षकल्याणक। 2. अभिनंदननाथ के बैशाख शु. 6 गर्भ, माघ शु. 12 जन्म, और तप, पौष शु. 14 ज्ञान और बैशाख शु. 6 मोक्ष। 3. अनन्तनाथ का कार्तिक कृ. 1 गर्भकल्याणक।

जयमाला

-शंभु छन्द-

हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।
भक्ती से प्रभु के चरणों में, गुणमाल चढ़ाने आये हैं।।

है धन्य अयोध्यापुरी जहाँ, श्री आदिनाथ ने जन्म लिया।
जिन अजितनाथ अभिनंदन सुमती, प्रभु अनंत ने धन्य किया।।
कैलाशगिरी से वृषभदेव जिन, मोक्षधाम को पाये हैं।।हे0।।1।।

सम्राट् भरतचक्री ने दीक्षा, ले शिवपद को प्राप्त किया।
इक्ष्वाकुवंशि[1] नृप चौदह लाख हि, लगातार शिवधाम लिया।।
ये पुरी विनीता के जन्में, परमात्मधाम को पाये हैं।।हे0।।2।।

बाहुबलि कामदेव ने जीत, भरत को फिर दीक्षा धरके।
प्रभु एक वर्ष थे ध्यान लीन, तन बेल चढ़ी अहि भी लिपटे।।
फिर केवलज्ञानी बनें नाथ, हम गुण गाके हर्षाये हैं।।हे0।।3।।

श्री अजितनाथ आदिक चारों, तीर्थंकर सम्मेदाचल से।
शिवधाम गये इन्द्रादिवंद्य, हम नित वंदें मन वच तन से।।
धनि धन्य अयोध्या जन्मस्थल, शिवथल वंदत हर्षाये हैं।।हे0।।4।।

चक्रीश सगर आदिक यहाँ के, कर्मारि नाश शिव लिया अहो।
श्री रामचन्द्र ने इसी अयोध्या, को पावन कर दिया अहो।।
मांगीतुंगी से मोक्ष गये, इन वंदत पुण्य बढ़ाये हैं।।हे0।।5।।

युग की आदी में आदिनाथ, पुत्री ब्राह्मी-सुंदरी हुई।
पितु से ब्राह्मी औ अंकलिपी, पाकर विद्या में धुरी हुई।।
पितु से दीक्षा ले गणिनी थीं, इनके गुण सुर नर गाये हैं।।हे0।।6।।

इनके पथ पर अगणित नारी, ने चलकर स्त्रीलिंग छेदा।
आर्यिका सुलोचना ने ग्यारह, अंगों को पढ़ जग संबोधा।।
दशरथ माँ पृथिवीमती आर्यिका, को हम शीश नमाये हैं।।हे0।।7।।

1. अयोध्या में भरत को आदि लेकर चौदह लाख इच्छ्वाकुवंशीय राजा बिना व्यवधान के लगातार मोक्ष गए है। हरिवंशपुराण सर्ग 13, श्लोक 12।

सीता ने अग्निपरीक्षा में, सरवर जल कमल खिलाया था।
पृथ्वीमति गणिनी से दीक्षित, आर्यिका बनी यश पाया था।।
श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण लवकुश, सब दुःखी हृदय गुण गाये हैं।।हे0।।8।।

सीता ने बासठ वर्षों तक, बहु उग्र उग्र तप तप करके।
तैंतिस दिन सल्लेखना ग्रहण, करके सुसमाधि मरण करके।।
अच्युत दिव में होकर प्रतीन्द्र, रावण को बोध कराये हैं।।हे0।।9।।

जय जय रत्नों की खान रत्न-गर्भा रत्नों की प्रसवित्री।
जय जय साकेतापुरी अयोध्या-पुरी विनीता सुखदात्री।।
जय जयतु अनादिनिधन नगरी, हम वंदन कर हर्षाये हैं।।हे0।।10।।

बस काल दोष से इस युग में, यहाँ पांच तीर्थंकर जन्म लिये।
सब भूत भविष्यत् कालों में, चौबिस जिन जन्मभूमि हैं ये।।
हम इसका शत शत वंदन कर, अतिशायी पुण्य कमाये हैं।।हे0।।11।।

जय जय तीर्थंकर भरत सगर, जय रामचन्द्र लव कुश गुणमणि।
जय जयतु आर्यिका ब्राह्मी माँ, सुंदरी व सीता साध्वीमणि।।
हम केवल 'ज्ञानमती' हेतू, तुम चरणों शीश झुकाये हैं।।हे 0।।12।।

जय जयतु अयोध्या जिस निकटे, है टिकैतनगर जहाँ जन्म लिया।
जय जयतु आर्यिका रत्नमती, जिनने निज जीवन धन्य किया।।
ब्राह्मी माँ की पदधूलि बनूं, यह भाव हृदय लहराये हैं।
हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।।हे0।।13।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-दोहा-

वीर संवत् पचीस सौ, उन्निस मगसिर शुद्ध।
ग्यारस तिथि पूजा रची, जिन यजते हो सिद्धि।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–चाँद मेरे आ जा रे.....

आरती सुमति जिनेश्वर की,
सुमति प्रदाता, मुक्ति विधाता, त्रैलोक्य ईश्वर की।।टेक.।।

इक्ष्वाकुवंश के भास्कर, हे स्वर्णप्रभा के धारी।
सुर, नर, मुनिगण ने मिलकर, तव महिमा सदा उचारी।।आरती....।।1।।

साकेतपुरी में जन्मे, माता सुमंगला हरषीं।
जनता आल्हादिक मन हो, आकर तुम वन्दन करती।।आरती...।।2।।

श्रावण शुक्ला दुतिया को, प्रभु गर्भकल्याण हुआ है।
फिर चैत्र शुक्ल ग्यारस को, सुरपति ने न्हवन किया है।।आरती....।।3।।

वैशाख शुक्ल नवमी तिथि, लौकान्तिक सुरगण आए।
सिद्धों की साक्षीपूर्वक, दीक्षा ले मुनि कहलाए।।आरती....।।4।।

निज जन्म के दिन ही प्रभु को, केवल रवि प्रगट हुआ था।
इस ही तिथि शिवरमणी ने, आ करके तुम्हें वरा था।।आरती....।।5।।

सम्मेदशिखर की पावन, वसुधा भी धन्य हुई थी।
देवों के देव को पाकर, मानो कृतकृत्य हुई थी।।आरती....।।6।।

उस मुक्तिथान को प्रणमूं, नमूं पंचकल्याणक स्वामी।
''चंदनामती'' तुम आरति, दे पंचमगति शिवगामी।।आरती....।।7।।

अयोध्या तीर्थ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–चांद मेरे आ जा रे .....

आरती तीर्थ अयोध्या की-2
तीर्थंकरों की, जन्मभूमि यह, सब मिल करो आरतिया।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।टेक.।।

शाश्वत यह पुरी अयोध्या, जग में जानी जाती है।
सम्मेदशिखर के सदृश, पावन मानी जाती है।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।1।।

यूं तो इस भू पर सारे, तीर्थंकर सदा जनमते।
लेकिन इस युग में जन्में, तीर्थंकर पंच परम थे।।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।2।।

श्री ऋषभ अजित अभिनंदन, सुमती अनंत जी जन्मे।
उन्नीस शेष तीर्थंकर, सब अलग-अलग ही जन्मे।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।3।।

तीरथ की पावन रज को, मस्तक पर धारण कर लो।
इसकी आरति कर अपने, कष्टों का निवारण कर लो।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।4।।

आदीश्वर की खड्गासन, प्रतिमा को नमन करें हम।
''चंदनामती'' इस शाश्वत, तीरथ को नमन करें हम।।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।5।।